JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिंदुत्व ही राष्ट्रवाद है : वीर सावरकर एक दृष्टि

डॉ0 दरख्शाँ बानो
एम0 ए, एम0 एड, पी-एच डी, नेट
पुत्री-स्वर्गीय रियाज़ अहमद

शोध –सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र 'हिंदुत्व ही राष्ट्रवाद है' विशेष विनायक दामोदर वीर सावरकर की दृष्टि में प्रस्तुत विचार तथ्य के अध्ययन के संदर्भ में लिखा गया है। हिंदुत्व ही राष्ट्रवाद है विषय अन्य सामाजिक तथ्यों के समान एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में उभर कर सामने आया। पूर्व एवं पश्चिम में विवादित महत्वपूर्ण तथ्यों को समझने के लिए विनायक दामोदर वीर सावरकर के विचारों पर ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि यह महान स्वतंत्र राष्ट्रवादी विचारक ही इस विषय के प्रवर्तक है।

यह एक प्रचंड राष्ट्रवादी महान क्रांतिकारी व्यक्ति थे जिन्होंने शताब्दी के प्ररम्भिक दशक में अपने साहसिक राजनीतिक कार्य द्वारा ख्याति प्राप्त कर ली भारतीय स्वतंत्र संग्राम के इतिहास में इनका नाम सदा चिरस्मरणीय रहेगा। सावरकर जी ने जीवन भर अपने सिद्धांतों के लिए संघर्ष किया। अपने उग्रवादी तथ्य विचारों के कारण दुखों एवं संघर्षों का सामना करते रहें।(1) उन्होंने इस विवादित हिंदुत्व विषय को जीवन शैली से सम्बद्ध कर राष्ट्रवाद शब्द को स्पष्ट कर अपने मन्तव्य को सबके समक्ष प्रस्तुत किया जिसे भारतीय संस्कृति एवं परंपरा में प्रमुख स्थान दिया गया है।

परिचय

शोध-पत्र के विषय 'हिंदुत्व ही राष्ट्रवाद है' को समझने के लिए सर्वप्रथम 'हिंदुत्व' शब्द के अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक है। 'हिंदुत्व' केवल एक शब्द ही नहीं एक संपूर्ण इतिहास है। 'हिंदुत्व' का संपूर्ण भाव हृदयंगम करने के लिए हमें 'हिंदू' शब्द

का वास्तविक अर्थ पहले समझना होगा यह जानना होगा कि करोड़ों मनुष्यों के हृदय में इस नाम का साम्राज्य कैसे प्रतिष्ठित हुआ। यह निश्चित है कि प्राचीन मिश्रवासी और बैबिलन वालों की जिस सभ्यता का संसार में इतना नाम हुआ उस सभ्यता का जब पता भी नहीं था तभी पवित्र सिंधु सलिल की कलकल ध्वनि के साथ अज्ञीय धूम की सुगन्ध भी प्रवाहित हुआ करती थी और वह तट

प्रदेश वेदघोष से गूँजा करता था जिससे आर्यों के अंतःकरण में आध्यात्मिक ज्योति प्रज्वलित रह रहा करती थी इन्होंने गंभीर तत्वों का अनुभव किया था।(2) ये सातों सिंधु में फैल चुके थे नदियों से घिरे और सींचे जाने वाले इस देश में रहते हुए कृतज्ञता बुद्धि से अपना नाम भी सप्तसिंधु रख लिया, जो सप्तसिंधु नाम संसार के सबसे प्राचीन 'ऋग्वेद' में आता है और जो समूचे वैदिक भारतवर्ष का नाम था। आर्य लोग सदा से ही कृषि को प्रधान दृष्टि मानते आए हैं इससे स्वभावतः ही यह सात नदियों के परम भक्त थे। ये सातों नदियाँ उनके लिए उनकी राष्ट्रीयता और संस्कृति के चिन्ह स्वरूप ही थीं।

यहां से आर्य जब आगे बढ़े परंतु सप्त सिन्धुओं पर उनकी श्रद्धा और भक्ति कम नहीं हुई। धीरे–धीरे यह अपने आपको 'सिंधु' कहने लगे यही नहीं बल्कि आस–पास के राष्ट्र इन्हें सप्त सिंधु के नाम पर जानते थे। संस्कृत का 'स' भारतीय तथा भारतीयेतर प्राकृतों में आकर प्रायः 'ह' हो जाता है जिससे 'सरस्वती' शब्द ईरानी भाषा में 'हरहवती' हो गया और असुर का रूपांतर हुआ है 'अहुर' हमारे राष्ट्र का वैदिक नाम ''सप्तसिंधु'' प्राचीन इरानियों की 'आवेस्ता' मे हप्त हिन्दु करके लिखा गया। इस प्रकार इतिहास के उषः काल में हम देखते है कि हम 'सिंधु' यानि ''हिन्दु'' राष्ट्र के थे।(3)

इस प्रकार ग्रन्थान्तर्गत पक्के प्रमाणों से यह निर्विवाद सिद्ध है कि हमारा सबसे पहला नाम जो रखा वह 'सप्त सिंधु' या 'हप्त हिन्दु' है और उस समय के समस्त ज्ञात संसार के सब देश हमें इसी सिंधु या 'हिन्दु' नाम से जानते थे।(4)

यह ''हिंदू'' शब्द ही इस विचारधारा का हृदय है हिंदुस्तान है इसका भौगोलिक केंद्र। हिंदू शब्द की सुसंगत तर्क सम्मत तथा सर्वमान्य व्याख्या वीर सावरकर की एक महान वैचारिक देन है।

तात्पर्य हिंदू वही है जो सिंधु नदी से सिंध समुद्र पर्यंत विस्तृत इस देश को अपनी 'पितृ-भू' मानता है जो रक्त संबंध से उस जाति का वंशधर है। जिसमें प्रथम उद्‌गम वैदिक सप्त–सिन्धुओं में हुआ और जो पीछे बराबर आगे बढ़ती अंतभूर्त को पचाती और उसे महनीय रूप देती हिंदू जाति के नाम से विख्यात हुई जो उत्तराधिकार संबंध से उसी जाति की उस संस्कृति को अपनी संस्कृति मानता है , जो संस्कृति संस्कृत भाषा में संचित और जाति के इतिहास, साहित्य कला धर्मशास्त्र व्यवहार शास्त्र, रीति–नीति, विधि–संस्कार, पर्व और त्योहार इनके द्वारा अभिव्यक्त हुई है और जो इन सब बातों के साथ इस देश को अपनी पुण्य-भू अपने अवतारों और ऋषियों को, अपने महापुरुषों और आचार्यो की निवास भूमि तथा सदाचार और तीर्थयात्रा की भूमि मानता है।

हिंदुत्व के जो लक्षण है – एक राष्ट्र एक जाति और एक संस्कृति इन सब लक्षणों का अंतर्भान करके संक्षेप में ये कहा जा सकता है कि हिंदू वह है जो सिंधु स्थान को केवल पितृ-भू नहीं पुण्य–भू भी मानता है। हिंदुत्व के प्रथम दो लक्षण राष्ट्र और जाति- 'पितृ-भू' शब्द में आ जाते है और तीसरे

लक्षण एक संस्कृति –''पुण्य-भू'' शब्द से मुख्यतः प्रकट होता है क्योंकि संस्कृति में सब संस्कार आ जाते हैं और संस्कृति ही किसी भूमि को पुण्य–भूमि बनाती है यह परिभाषा और भी संक्षिप्त निम्न अनुष्टुप में की जा सकती है।

''आसिंधु सिंधु पर्यन्ता, यस्य भारत भूमिका ।

पितृभूः पुण्य भूश्चैव स वै हिंदुरिति स्मृतः।'' (6)

इससे स्पष्ट है कि वैदिक धर्मावलम्बी जैन, बौद्ध ,सिख ही नहीं अपितु पर्वतमलाओं में निवास करने वाली जनजातियाँ भी हिंदू ही हैं।

'सावरकर जी' ने यह स्पष्ट कर दिया है कि''हिंदुत्व'' से अभिप्राय कोई संप्रदाय या धर्म नहीं हो सकता। हिंदुत्व हमारी जाति का संपूर्ण इतिहास है। उन्होंने यह भी कहा इस नाम में अनेक भावनाएँ और पद्धतियाँ छुपी हुई है और वे भावनाएँ इतनी बलवती और गंभीर है कि इस नाम का विश्लेषण करना असंभव हो जाता है यदि अधिक नहीं तो चालीस शताब्दियों का इतिहास इस नाम से भरा हुआ है।

''हिंदुत्व'' शब्द का उपयोग पहली बार 1892 ई में चंद्रनाथ बसु जी ने किया और बाद में इस शब्द को विनायक दामोदर सावरकर जी ने लोकप्रिय बनाया। कुछ लोग फाँसीवादी विश्लेषण पर विचार करते हैं और सुझाव देते हैं कि ''हिंदुत्व'' ''रूढ़िवाद'' या नैतिक निरपेक्षता का चरम रूप है।(8)

हिंदुत्व भारतीय जीवनशैली की अभिव्यक्ति है जो सनातन धर्म पर आधारित है, हिंदुत्व शब्द का सही अंग्रेजी अनुवाद हिंदुनेस होगा, हिन्दुइज्म अंग्रेजी का शब्द और इसका अर्थ लगभग हिंदुत्व के समान है लेकिन कोई भी इज्म यानि कि ''वाद'' एक तय व गैर लचीले वैचारिक खाँचे का परिचायक है मसलन पूंजीवाद, समाजवाद आदि। इसलिए भारतीय जीवन शैली को निरुपित करने के लिए किसी वाद से जुड़े शब्द हिन्दुइज्म के बजाय हिंदुत्व अधिक उचित है, हिंदुत्व भारत के सनातन सभ्यता मूल्यों में निहित एक सांस्कृतिक प्रवाह है और इसका राजनीति से कोई लेना देना नहीं है। आर0 एस0 एस0 मनमोहन भागवत ने 2019 में एक लेख में लिखा था हिंदू यह 'हिंदुत्व' होना सभी भारतीयों की पहचान बन गया है, आर0 एस0 एस0 के संस्थापक के0 बी0 हेडगेवार ने इस 'हिंदुत्व' को सभी भारतीयों के बीच एकता की भावना को जगाने के लिए एक माध्यम बनाया उन्हें उनकी जाति, क्षेत्र, धर्म, भाषा से ऊपर उठाकर एक दूसरों से जोड़ा, उन्होंने पूरे समाज को 'हिंदुत्व' के एक सूत्र में बाँधकर संगठित करना शुरू किया।(9)

राष्ट्रवाद का उद्भव लोक जीवन के विकास क्रम में वस्तुनिष्ठ और भावनिष्ठ दोनों प्रकार के ऐतिहासिक तत्वों की परिपक्वता के पश्चात् हुआ जैसा ई0 एच0 कार ने लिखा है, ''सही अर्थों में राष्ट्रों का उदय मध्ययुग की समाप्ति पर हुआ। ''(10)

व्यापक राष्ट्रीयता के आधार पर समाज राज्य और संस्कृति के उद्भव के पूर्व संसार के विभिन्न भागों का जनजीवन मोटे तौर पर इन स्थितियों से गुजरा कबीलों की जिंदगी, दास प्रथा, सामंतवाद। सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के खास दौर में राष्ट्रों का जन्म हुआ। 'राष्ट्र ' ही आज का युग सत्य है, और राष्ट्रीयता मानव मूल की भावना। विज्ञान और औद्योगिकी जैसे वस्तुनिष्ठ शास्त्रों के परे अर्थ, राजनीति और संस्कृति के अन्याय क्षेत्रों में इधर जो आंदोलन हुए हैं वह सजग राष्ट्रीयता की भावना से ही उत्प्रेरित हुए हैं चाहे इन आंदोलनों का संगठन राष्ट्रों ने अपनी स्वतंत्रता और संस्कृति की रक्षा और पुष्टि के लिए किया हो या दूसरे राष्ट्रों की स्वतन्त्रता और संस्कृति के अपहरण के लिए। समाजवादी या पूंजीवादी आधार पर मानवता के एकीकरण और सारे संसार के नवनिर्माण आदि के आधुनिक कार्यक्रमों के लिए भी राष्ट्रों को ही सर्वप्रधान इकाई माना गया है।

राष्ट्रवाद की अवधारणा का प्रविधि का विकास करते हुए अपने एक शोध परक लेख में जान प्लामेन्टाज़ ने दो प्रकार की राष्ट्रीयता की व्याख्या की है।

दोनों ही राष्ट्रीयता अपने मूलभूत चरित्र में एक सांस्कृतिक संघटना है, यधपि ये प्रायः राजनैतिक स्वरूप ग्रहण कर लेते हैं इनमें से एक प्रकार की राष्ट्रीयता पाश्चात्य है जो मूल रूप से पश्चिमी यूरोप में विकसित हुई है और दूसरी पूर्वी है जो पूर्वी यूरोप, एशिया , अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में पाई जाती है दोनों ही प्रकार की राष्ट्रीयता कुछ सामान्य प्रतिमानों के स्वीकरण पर आश्रित है –जिनके द्वारा किसी विशिष्ट राष्ट्रीय संस्कृति के उत्थान का मूल्यांकन होता है।

मार्क्स ने भी राष्ट्रवाद की अवधारणा पर अपने लेखन में विचार किया है उन्होंने अपने चिंतन में राष्ट्रवाद को कभी एक सैद्धांतिक समस्या के रूप में नहीं देखा।

हेरिस वी0 डेविस ने भी ने भी दो प्रकार के राष्ट्रवाद की अवधारणा को स्वीकार किया – प्रथम प्रबुद्धता का राष्ट्रवाद जो मूलतः भावात्मक होने की जगह तार्किक है और द्वितीय संस्कृति और परंपरा पर आधारित राष्ट्रवाद जिसे फिख्टे और हर्डर जैसे जर्मन रोमांटिक लेखकों द्वारा विकसित किया गया।(14)

मानव जीवन में राष्ट्रवाद की भूमिका के निर्णायक महत्व के कारण संसार के कुछ सर्वश्रेष्ठ चिंतकों में राष्ट्रवाद को अपने अन्वेषण और अध्ययन का विशेष क्षेत्र बनाया।

राष्ट्र की परिभाषा एक ऐसे जनसमूह के रूप में की जा सकती है जो कि भौगोलिक सीमाओं में एक निश्चित देश में रहता हो, समान परंपरा, समान हितों तथा समान भावनाओं से बँधा हो और जिसमे एकता के सूत्र में बांधने की उत्सुकता तथा समान राजनैतिक महत्वाकांक्षाएँ पाई जाती है। **राष्ट्रवाद के निर्णायक** तत्वों में राष्ट्रीयता की भावना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीयता की भावना किसी राष्ट्र के सदस्यों में पायी जाने वाली सामुदायिक भावना है जो उनका संगठन सुदृढ़ करती है।

भारत में अंग्रेजों के शासन काल में राष्ट्रीयता की भावना का विशेष रूप से विकास हुआ, इस विकास में विशिष्ट बौद्धिक वर्ग का महत्वपूर्ण योगदान रहा। (15)

विश्व के अनेक राजनैतिक विचारकों में राष्ट्र की जो परिभाषा प्रस्तुत की है उसमें प्रोफेसर हैराल्ड लास्की का महत्वपूर्ण स्थान है जिन्होंने राष्ट्रीयता को एक ऐसी भावना बताया है कि यह लोगों के लिए एक ऐसे समूह में एकता का विशिष्ट रूप से सृजन करती है और जन समुदाय को अवशिष्ट मानव समाज से पृथक करती है। उन्होंने यह भी कहा है कि यह एकता समन्वित प्रयासों से निर्मित समान इतिहास अर्जित विजयों और परंपराओं का प्रतिफल है। इसके फलस्वरूप इसमें बन्धुत्व की भावना का उदय होता है जिससे उस समाज में एकरुपत की स्थापना होती है। (16)

श्री इज्राईल जांगबिल ने अपनी पुस्तक ''प्रिंसिपल ऑफ नेशनलिटीज'' में राष्ट्र के नियामक तत्वों का वर्णन किया उन्होंने कहा धर्म की एकता, भाषा की एकता, सामान परंपरा और समान सुख–दुख राष्ट्रीयता के नियामक तत्व है। परंपरा से उनका तात्पर्य वीर जनों से संबंधित गीतों और लोक कथाओं से है।

वीर सावरकर की दृष्टि में हिंदुत्व ही राष्ट्रवाद है -

राष्ट्रवाद की उपरोक्त परिभाषाओं से वीर सावरकर के इसी मत की पुष्टि होती है कि हिंदुस्तान में हिंदू ही राष्ट्रीय है और अन्य सभी लोग संप्रदाय अथवा संख्या की दृष्टि से विचार किया जाए तो उन्हें अल्पसंख्यक की संज्ञा दी जा सकती है। वीर सावरकर जी कहते हैं कि –''हिंदुओं का प्राचीन और आधुनिक इतिहास समान है। उनके शत्रु एवं मित्र समान है। उन्होंने समान रूप से संकटों का सामना किया है तो उनकी युद्धों में प्राप्त की गई विजय भी समान है। उनके राष्ट्रीय दुःख भी समान है तो आकांक्षाएं भी समान।''

सावरकर जी आगे कहते हैं कि ''इन सब बातों से भी ऊपर उठकर एक तथ्य और है वह यह है कि सभी हिंदू समान पुण्यभूमि के कारण एक पावन सूत्र में आबद्ध है। ''

वीर सावरकर जी फिर कहते हैं कि ''हिंदुओं के पर्व और सांस्कृतिक प्रक्रियाएं भी समान है। वैदिक ऋषियों पर उन्हें समान रूप से गर्व है। व्याकरणाचार्य पाणिनी और पतंजलि, महाकवि भवभूति और कालिदास, श्री राम और श्री कृष्ण, शिवाजी और प्रताप, गुरु गोविंद और बंदा उन सभी के समान रूप से प्रेरणास्रोत हैं उनकी प्राचीन और पावन भाषा संस्कृत के समान ही उनकी लिपियों का आधार भी वही है और नागरी लिपि ही गत अनेक शताब्दियों से उनके पावन ग्रंथों की लिपि रही है।'' (17)

हिंदू एक राष्ट्र है, अपनी इस मान्यता पर और भी अधिक बल देते हुए वीर सावरकर यह भी कहते हैं –

एक बात निश्चित है कि किसी पगड़ी विशेष में, ब्रह्म सूत्र में, चोरी में या गो-मूत्र में हिंदुत्व नहीं हैं।

हिंदुत्व (हिंदू राष्ट्रीयता) कोई ताड़–पत्र पर लिखी हुई पोथी नहीं है जो ताड़–पत्र चटखते ही चूर–चूर हो जाए और न आज उत्पन्न होकर कल नष्ट होने वाली कागज पर लिखी हुई घटना ही हिंदुत्व है। हिंदुत्व गोलमेज परिषद् का कोई प्रस्ताव नहीं है। हिंदुत्व एक महान जाति का जीवन है वह सहस्त्राषधि पुण्यात्माओं के युगानुयुग के अथक परिश्रम एवं प्रयासों का परिपाक है। ''

स्वातंत्र्य वीर सावरकर को भारत में हिंदू राष्ट्र की वर्तमान अवस्था के प्रति चिंता भले ही रही हो किंतु उनका यह अदम्य विश्वास रहा है कि हिंदू राष्ट्र पुरुष पुनः जाग्रत होकर सुदृढ़ और शक्ति संपन्न राष्ट्र के रूप में खड़ा होगा।

उन्होंने अपनी इसी भावना को इन शब्दों में व्यक्त किया है–

''आज वह उतार पर है किंतु फिर भी समुद्र ही है। सुप्त होने पर भी ज्वालामुखी है। बेसुधि के चक्कर में उस विराट राष्ट्रपुरुष के द्वारा प्रमाद के कार्य हो रहे हैं, किंतु यह बेसुध स्थिति उर्ध्व की है, मृत्यु की नहीं। इस हिंदू राष्ट्र और हिंदू धर्म के उत्कर्ष के लिए हवन होने की आज भी शताधिक हुतात्माओं के शरीर का बिंदु बिंदु मचल रहा है। आज हुतात्माओं की जलन और आत्मयज्ञ ही इस हिंदू–राष्ट्र के अक्षुण्य जीवन का साक्षी है इसके पुनरुस्थान और पुनरुज्जीवन का हामी है। '' (18)

सावरकर जी ने जहाँ हिंदू राष्ट्रीयता का प्रतिपादन किया वहाँ इंडियन नेशनल कांग्रेस ने भारतीय राष्ट्रवाद को अपना आदर्श माना। कांग्रेस की दृष्टि में एक समान भूखंड पर निवास करने वाले सभी लोगों को एक राष्ट्र माना जाना चाहिए। जो कोई भी भारत में आकर बस गया वह चाहे अरब है या यहूदी वह भी हिंदुओं के समान ही भारतीय राष्ट्र का अंग है।

उन्होंने हिंदुत्व का राष्ट्रवाद मानने के साथ यह भी कहा राष्ट्रवाद मानवता अखिल मानवीय राज्य की स्थापना की दिशा में अपरिहार्य पग है लगभग 50 वर्ष पूर्व उन्होंने लिखा था कि उनकी आस्था सार्वभौम राज्य में है जिससे सभी जातियों के लोग सम्मिलित हो और सभी नर–नारी, धरती, सूर्य तथा उसकी भूमि के फलों का सरलता सहित उपयोग करें क्योंकि यह धरती ही मानव की मातृभूमि तथा पितृभूमि है।

उन्होंने यह भी कहा वस्तुतः विश्व ही हमारा देश है, और मानवता ही हमारा धर्म तथा देशभक्ति।

वीर सावरकर ने ग्लास्गों से प्रकाशित होने वाली 'दी वर्ल्ड' नामक पत्रिका के संपादक गाग0 एल्डर्ड में लिखे गए एक पत्र में लिखा था कि ''मैं ऐसा मानता हूं कि यद्वपि मानवता को राष्ट्रवाद तथा संघ बाद के पक्ष से गुजरना होगा किंतु फिर भी हमारा अंतिम लक्ष्य राष्ट्रवाद नहीं अपिहु मानववाद ही हो सकता है।'' (19)

विश्व–बंधुत्व की मंजुल और मनोहर भावना से वीर सावरकर का हृदय भी आंदोलित था।

मानव मात्र में शांति और समृद्धि होना ही वीर सावरकर के दर्शन का लक्ष्य था वीर सावरकर का मत है कि जिस कार्य से भी मानवीय भलाई में सहायता प्राप्त हो वही नैतिक , न्यायपूर्ण तथा अपेक्षित और सही है। उन्होंने हिंदुत्व राष्ट्रवाद में आत्यंतिक अहिंसा को महापाप कहा उन्होंने इस सिद्धांत को हिंदू राष्ट्र के लिए घातक निरूपित किया है कि यदि मानव ने वन्य पशुओं से आत्मरक्षार्थ अपनी प्रकृति भुजाओं को हथियार के रूप में कृत्रिम भुजाओं का सहारा न दिया तो आज मानव धरा धाम पर ही कहीं दिखाई ना देता, उनका स्पष्ट मत है कि कोई भी राष्ट्र आत्यांतिक अहिंसा के सहारे अपनी रक्षा करने में समर्थ सिद्ध नहीं हो सकता।

विश्व इतिहास साक्षी है कि किसी भी राष्ट्र के जीवन में ऐसे अनेक रूप आते हैं जब उसे शास्त्रों को एक ओर रखकर शस्त्रों का ही सहारा लेना पड़ता है। प्रतिशोध भी अन्याय का नाश करने के लिए कई स्थितियों में होने वाली प्राकृतिक प्रतिक्रिया ही है।

इस प्रकार वीर सावरकर ने भारत को हिंदू राष्ट्र मानकर उसकी सभी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। इस महान मनीषी ने बार–बार राजनीति के हिंदूकरण, हिंदुओं के सैनिकीकरण और देश के औद्वोगीकरण पर बल दिया था।

स्वातंत्र्य वीर सावरकर को 'हिंदुत्व' के अभ्युदय के संबंध में उनका प्रचंड आत्मविश्वास था। वह इस बात पर सदैव ही बल देते थे कि हमें किसी भी प्रश्न पर निर्णय लेते हुए एक ही बात ध्यान में रखनी चाहिए कि ''निर्णय से हिंदू का हित होगा अथवा अहित। '' क्योंकि उनकी मान्यता थी कि हिंदुस्तान में हिंदू हित ही राष्ट्रहित है। उनका मत था कि स्वतंत्र भारत की राजनीति का आधार भी यही होना चाहिए।

संदर्भ - ग्रंथ

1. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारी - डॉ0 एस एल नागोरी एवं जीतेश नागोरी प्रकाशक - श्रीमती शशि जैन मुद्रक - शीतल प्रिंटर्स जयपुर

   पृष्ठ संख्या - 72

2. हिंदुत्व - सावरकर लिखित पृष्ठ संख्या - 04

3. हिंदुत्व - सावरकर लिखित पृष्ठ संख्य - 05

4. हिंदुत्व - सावरकर लिखित पृष्ठ संख्या - 04

5. हिंदुत्व का अनुशीलन गुप्त, प्रकाशक-सूर्य प्रकाशन-नई सड़क, दिल्ली

   मुद्रक - अमर प्रिंटिंग प्रेस विजय विजय नगर, दिल्ली पृष्ठ संख्या - 116

6. हिंदुत्व (हिंदी) वीर सावरकर ''एक मराठा'' कृत हिंदुत्व नामक अंग्रेजी पुस्तक का हिंदी अनुवाद प्रकाशक - लक्ष्मण नारायण गर्दे मुद्रक - किशोरीलाल केडिया, वर्णिक प्रेस,सरकार लेन, कलकत्ता पृष्ठ संख्या - 120 - 121

7. हिंदुत्व सावरकर लिखित पृष्ठ संख्या - 03

8. http//he-m-wikipidia-org>wikiहिंदुत्वविकिपीडिया

9- https%//hindi-theprint-in>india>

10.ई0 एच0 कार पृष्ठ संख्या - 07

11.भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि ए0 आ0 भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद द्वारा देसाई प्रवर्तित संस्करण 1976 - 77 पृष्ठ संख्या - 03

12.प्लामेन्टाज़ यूजीज कामेका द्वारा संपादित नेशनलिज़्म, द नेचर एण्ड इवोल्यूशन ऑफ नेशनलिज्म (लन्दन एडवर्ड अरनॉल्ड 1914) में संकलित लेख टू टाइप्स ऑफ नेशनलिज़्म पृष्ठ संख्या - 23 - 36

13.कार्ल मार्क्स, द ब्रिटिश रूल इन इंडिया कार्ल मार्क्स और एफ इनगिल्स, द फर्स्ट इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेन्स - 1857 - 58, पब्लिशिंग_मास्को फॉरेन लैंग्वेजेस

14.लोक संस्कृति में राष्ट्रवाद शोध–प्रबंध बद्री नारायण राधा कृष्णा प्रकाशन लिमिटेड 2/38, अंसारी मार्ग दरियागंज पृष्ठ संख्या - 17

15.भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (इतिहास) दूरस्थ शिक्षा निदेशालय महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक पेज नंबर - 5

16.हैरल्ड ज0 लास्की लिखित ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स, पृष्ठ संख्या - 119 - 220

17.धनंजय वीर लिखित सावरकर एण्ड हिज़ टाइम, पृष्ठ संख्या - 228 - 229

18.राष्ट्रधर्म, मासिक मई 69 पृष्ठ - 67

19.सावरकर लिखित हिंदुत्व पृष्ठ संख्या - 37

20.क्रांति का नाद, पृष्ठ संख्या - 164